पाठ 4. नन्हा खुदीराम

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्रता सेनानी खुदीराम बोस की देशभक्ति और साहस से परिचित करवाना है। खुदीराम बचपन से ही देश की आज़ादी का सपना देखते रहते थे जिसे पाने के लिए उन्होंने बहुत कम आयु में ही अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

पाठ का सारांश

भारत माता को अंग्रेज़ों की दासता से मुक्त कराने के लिए 19 वर्ष की युवावस्था में फाँसी के फँदे को चूमने वाले खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर 1889 को मिदनापुर ज़िले के हबीबपुर गाँव में हुआ था। माता-पिता की मृत्यु हो जाने पर उनकी बड़ी बहन अनुरूपा ने उनका पालन-पोषण किया। एक दिन उन्होंने मंदिर के बाहर बीमार लोगों को नंगे पैर बैठे देखा। पूछने पर पता चला कि इससे भगवान उनकी बीमारी दूर कर देंगे। खुदीराम ने तभी से ठान लिया कि वे भी अंग्रेज़ों की गुलामी की बीमारी को दूर करके रहेंगे। धीरे-धीरे वे क्रांतिकारियों के बीच लोकप्रिय हो गए। अंग्रेज़ सरकार को दहलाने के लिए उन्होंने अंग्रेज़ अधिकारी किंग्सफ़ोर्ड की गाड़ी पर बम फेंका। किंग्सफ़ोर्ड तो बच गया लेकिन उसकी पत्नी घायल हो गई। इसके लिए खुदीराम बोस को गिरफ़्तार कर लिया गया और फाँसी पर लटका दिया गया। भारत माता का यह सपूत मरकर भी लोगों के दिलों में हमेशा ज़िंदा रहेगा।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों से कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पूछें। फिर उन्हें बताएँ कि इस पाठ में हम एक अन्य महान स्वतंत्रता सेनानी के बारे में जानेंगे। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को मौन वाचन के लिए प्रेरित करें।

- बच्चों को नरम और गरम दल के बारे में संक्षिप्त रूप में बताएँ।
- बच्चों को बताएँ कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने किस प्रकार यह स्वतंत्रता प्राप्त की है।
- बच्चों में देश के प्रति प्रेम का भाव जाग्रत करने का प्रयास करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ।
- प्रतिदिन काम आने वाली वस्तुओं तथा बोले जाने वाले शब्दों के द्वारा बच्चों को संज्ञा समझाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।